आधुनिक हिन्दी नाटक : मानवीय रिश्ते में आनेवाले बदलाव

[रातरानी के विशेष संदर्भ में]

*डॉ. रंजना भालेराव

शोधपत्र-हिन्दी

साहित्य और समाज :- साहित्य और समाज में परस्पर संबंध घनिष्ठ है। सामाजिक जीवन साहित्य में प्रतिबिंबीत होता है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । सामाजिक समस्याओं , विचारों तथा भावनाओं का जहाँ वह सृष्टा है वहाँ वह उनसे प्रभावित भी होता है । साहित्यकार के व्यक्तित्व का निर्माण और उसकी अनूभूती तथा कल्पना एक सामाजिक देन है । क्योंकी यदि हम मानव प्रकृति को मुल ह्रप से सामाजिक मानते है, तो कला और सातहत्या के विभिन्न ह्रपो द्वारा अभिव्यक्त उसकि भावना और अनुभूती भी मुल ह्रप से सामाजिक और सभाज की ही देन है । साहित्यकार संवेदनशील प्राणी है । सामाजिक परिस्थिती के प्रति सजग, सचेष्ट और सावधान रहना उसकी नैसर्गिक वृत्ती भी है। इसी वृत्ती के कारण सभाज मे घटीत यथार्थ स्त्रितीर्या का चित्र अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है । समाज में घटित घटनाओं का चित्र साहित्य में प्रस्तुत होता है । साहित्यकार अपने साहित्य में अपने अनुभवों के द्वारा समाज के सामने लाने का प्रामाणिक प्रयास करता है । इस संदर्भ मे श्री रामदरश मिश्र कहते है - ''साहित्य सामाजिक जीवन समग्र चित्र प्रस्तुत करता है । यद्‌पि मानवीय अनुभव उसके केंद्र मे होता है । लेकिन अनुभव के साथ विचार की अपरिहार्य उपस्थिति होती है । अर्थात साहित्यकार केवल मानवीय अनूभवों को ही चित्रित नही करता वरन् संपूर्ण जीवन को चित्रित करने के क्रम में वह समाज के सबको परस्पर अपूस्यूत कर जीवन की संश्लिष्ट और समग्र पहचान उभारता है । "[१]

साहित्य की महत्वपूर्ण विधा : - नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा नाटक है । मानव की ह्रद्यगत अभिव्यक्त के सशक्त और प्रभावपूर्ण साहित्य विधा में नाटक महत्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है । नाटक दृश्य तथा श्राव्य कला है । नाटक को सर्व कला समन्वित साहित्य विधा माना गया है । नाटक हमारे यथार्थ जीवन से अधिक निकट है । नाटक में मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति अधिक सजीवता से उभरकर सामने आती है।

आधुनिक नाटक एवं नाटककार : - स्वतंत्रता के बाद हिंदी नाटको में धर्मभेद, सामाजिक असाहिष्णुता, पारंपारिक जीवन मूल्यो का विघटन, पारिवारिक संबंधो में अवमूल्यन, स्वतंत्रता आदि कारणो को अभिव्यक्त किया है । समाज में व्याप्त राजनीतिक, धार्मिक , आर्थिक सांस्कृतिक पक्षो के चित्रण के साथ आधुनिक व्यक्ति , समाज तथा सामाजिक संस्थाओंके टूटन - विघटन खोखलेपन को भी नाटकों में उजागर किया है । आधुनिक युग की जटिल, अर्ध- अनुभूत और अननुभूत संवेदनाओ की अभिव्यक्ती नाटकों में सशक्त रुप से हुई है ।

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक : - आधुनिक नाटककारों में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का नाम भी बहुत चर्चित रहा है । उनके नाटकों में विषय विभिन्नता के देखने को मिलता है । उनके नाटक के विषय में स्त्री - पुरुष संबंध , मानवीय संबंध में अलगाव, घुटन- टुटन तथा कुंठा, निराशा आदि दिखाई देते है । डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल सामाजिक नाटककार है । ऊन्होने अपने नाटको के माध्यम से समाज की हर समस्या को सामने लाने का प्रयास किया है । उनके हर एक नाटक मे स्त्री - पुरुष संबंध पर चर्चा की गई है । उनके कुल मिलाकर २८ नाटक है । सभी नायक चर्चित एवं प्रसिध्द है । डॉ लक्ष्मीनारायण लाल नाटक के संदर्भ कहते है कि- ''नाटक का प्रभाव अन्य साहीत्यिक विधाओं की अपेक्षा अधिक गहरा होता है । नाटक अपने युग के यथार्थ से साक्षात्कार करवाता है । नाटक ही समग्र जीवन के प्रमुख अंशो की ओर एक काल विशेष की सार्थक अभिव्यक्ती है।" [२]

डॉ. लाल के नाटकों की महत्वपूर्ण विशेषता :- डॉ. लाल के नाटकों में सामाजिक, राजनीतीक, धार्मिक , आर्थिक, युवापीढी के संघर्ष की समस्याएँ उजागर हुई है। सामाजिक समस्या के अंतर्गत पारिवारिक समस्या को भी अभिव्यक्त किया है । उनके नाटको की विशेषता यही रही है, उनके नाटक नये विषय लेकर आये है । इसी विशेषता संदर्भ में डॉ. दशरथ ओझा ने लिखा है - ''उनके नाटकों के कथ्य एवं शिल्प में एक नविनता तरोताजगी एवं जीवन से संश्लिष्ट एक नवीन समस्या उभरकर आयी । वे हिंदी नाटक का एक ऐसा नाट्योद्यान बनाना चाहते थे, जो विविधता के रंगो से उजागर हो, अतः वे ऐसो नाटककार बने जो मधुमकखी की तरह जहाँ से भी पराग मिले व हिंदी नाट्य -जगत मे ले जाते।"[३]

रातरानी : पती - पत्नि संबंध :- डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'रातरानी' नाटक मे आज की भौतिकवादी जीवनदृष्टी और आदर्श के संघर्ष की पृष्ठभूमि में नर-नारी के संबंधो को रुपायित करने का प्रयास किया गया है । इस नायक का मुलस्वर

* एम.ए. हिन्दीं, सेट-नेट पीएच.डी. औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

है - अर्थ और आदर्श के बीच संघर्ष और इस पृष्ठभूमि में पति - पत्नि के परस्पर संबंधो का विश्लेषण करना । दाम्पत्य संबंधो के माध्यम से डॉ. लाल ने इस नाटक मे मानव मन की गहराइ कों के अनुद्‌घाटित पक्षो को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है । व्यक्ती के संबंधो की विसगंतिपूर्ण आंतरिक त्रासदी को दाम्पत्य संबंधो की खुरदशी जिंदगी में बदलाव करनेवाले इस नाटक में स्त्री - पुरुष संबंधो का दर्शनिक विश्लेषण किया है । "रातरानी नाटक में मुख्य पात्र है कुंतल और जयदेव । यह दोनो पति- है । परंतू इन दोनों के संबंध पति- पत्नि जैसे सहज नही है । नाटक का मुल कथ्य ही कुंतल के शब्दो में व्यंजित होता है । "बाहर एक लडाई मालिक और मजदूर में छिडी हुई है, शासक और मातहत में जैसे द्वंद छिडा है, वैसे ही एक लडाई हम सबसें भी चल रही है।" [४]

रातरानी : आदर्श और यथार्थ का द्वंद : कुंतल और जयदेव के संबंध मे आदर्श और अर्थ के बीच संघर्ष दिखाई देता है । दोनों की जीवन पध्दति मे अंतर है। जयदेव के जीवन का ध्येय व्यक्तिगत अहं की तुष्टी एवं सुखोपभोग है। जयदेव पूँजीपति न होकर सुविधानुसार प्राप्त हो गई पूँजी और भोग विलास की नवसंस्कृति के दो भागों में संक्रमित करनेवाला दयनीय उच्च मध्यमर्गीय पात्र है । पत्नी के साथ नित अधिकार भावना से वह जिंदगी बसर करना चाहता है वह उसके मूल चरित्र को और अधिक उजागर कर देता है। जयदेव अपने जीवन मे जुआ खेलना, दोस्तो के साथ पार्टीयाँ करने मे ही अपने आपको आधुनिक युग का पुरुष मानता है ।

'पूँजी' के प्रति आकर्षण : जयदेव वर्तमान युग की पूँजीवादी लोभ की मनोवृत्ती से संचलित है । जयदेव के लिए पत्नी आर्थिक उत्पादन का साधन मात्र है । जयदेव कुंतल को अपनी व्यक्तिगत संपत्ती मानकर उसे अपनी इच्छा के अनुरुप तो चलाना चाहता है। पर उसकी भावनाओ का आदर करना नहीं जानता । जयदेव का अहंकार , स्वच्छदंता सुख सुविधा की कामना आदि उसके सुखी दांम्पत्य जीवन की आकांक्षा को भंग कर देती है ।

अलगाव बोध : कुंतल जैसी सुदंर , सुशिक्षित गृहकार्य में दक्ष पत्नी को पाकर भी जयदेव सुखी नहीं है । वह अपनी पत्नी को नौकरी करने के लिए बाध्य करता है। कुंतल पतिव्रता नारी है । इच्छा न होते हुए भी वह नोकरी करती है । जयदेव ने कुंतल का बारबार छल किया है, विचार का छल, व्यवहार का छल। इसको बदले कुंतल सदैव उसे स्नेह, विश्वास और सहानुभूती देती आयी है।यहा तक के जयदेव संदेह अविश्वास की आग में जलता हुआ कुंतल से कहता है - "मैने तुम जैसी बहुत सी औरत देखी है।" [५] किंतू नाही जीवन की विडंबना है, कि वह पुरुष से ऐसे शब्द सुनकर भी अपने समर्पण की बात कहती है - यही तो मेरी करणा है । तुमने बहुत औरते देखी, है, मैने सिर्फ एक पुरुष देखा है। [६] यहा दोनो मे विसंगती दिखायी देती है। जयदेव की समस्या है अधिकार की और स्त्री की समस्या है समर्पण की। कुंतल का चारित्र्य इस रुप मे प्रेम और श्रध्दा रखनेवाली आदर्श भारतीय नारी है । डॉ. रमेश गौतम कहतो है- "लक्ष्मीनारायण लाल 'रातरानी' के माध्यम से यह कहना चाहते की, जैसे रात की रानी का फुल सारे वातावरण को सुगंध से परिपूर्ण कर देती है, उसी प्रकार कुंतल जैसी सदगुणो से एक युक्त आदर्श भारतीय नारी अपने पती के घर को ही नही संपूर्ण समाज को सुवासीत एवं माधुर्यपूर्ण कर देती है।"[७] जयदेव आधुनिक युग का अर्थवादी पुरुष है । पैसो को महत्व देने वाला चरित्र है । भौतिक सुख सुविधा में जीनेवाला जयदेव मानवीय संबंधो की गहराइयो को समझ नही पाता । अपना पूरा पैसा जुआ, ताश, दोस्तों के साथ पार्टीयों मे खर्च करता है । अपनी पत्नी कुंतल को भी दहेज में मिली वस्तु समझता है। पैसों की लालच से उसे नौकरी भी करवाता है । उसपर पुरुष प्रधान संस्कृति का रोब जमाता है। इस बारे में कुंतल कहती है - "तुम मुझे शायद पत्नी नहीं समझते दहेज में मिली महज एक औरत समझते हो । – इसी तरह तुम प्रेस वर्कर्स को अपना गुलाम समझते हो।"[८] यही से जयदेव और कुंतल के संबंधो में ऐंड्गन और अलगांव दिखाई देता है। यही अलगाव आधुनिकता को उभारता है।

आंतरिक पीडा, द्वंद्व, घुटन एवंम टूटन की अभिव्यक्ति : - कुंतल के अनुसार सांसारिक दुःख और छल - प्रवंचनाओं का मुल कारण यह है कि, आज का सारा समाज शरीर के स्तर पर जी रह है । इसीकारण आज समाज में इतना अविश्वास , हृदयन्हीनता, टूटन और संघर्ष है । कुंतल और जयदेव के जीवन मुल्य और पध्दतीयो में बहुत अंतर दिखाई देता है। इसी कारण कुंतल अपनी आंतररिक आवश्यकतायों की पुर्ति के अभाव में भितर ही भितर टूट ही भितर टूट जाती है । उसके इस एकाकी पण की पीडा को जयदेव सम नही पाता । कुंतल के इस पारिवारिक (पती- पत्नी) संबंध मे असंतोष के कारण वह हमेशा एक सपना देखती है । - "एक बडासा सुनसान महल, जिसमें सुनहले कागज के फटे हुए पन्ने तेज हवा मे चारो ओर उड रहे है। मैं उडते हुए कटे पन्नो का पिछा करती हुई सारे कमरो मे दौड रही हूँ पर मेरे हाथ कुछ भी नही आता। "[९] अपनी बीमारी की हालत मे बार - बार इसी स्वप्न को देखना उसके जीवन मे सुनापन और अकेलापन तथा निरंजन को पकडपाने में असफल कुंतल को रेखांकित किया है। नाटक का नाम 'रातरानी' से की कुंतल के खंडीत व्यक्तत्व का आभास निर्माण होता है । कुंतल के जीवन की राते जयदेव से जुडी है, क्योंकी वह उसकी पत्नी है, परंतू आत्मा से निरंजन के साथ होने के कारण उसके हृदय की रानी है। उसके जीवन की यही विडंबना उसे अंर्तद्वंद्व के दंश से व्यथित करती है। कुंतल का खंडीत व्यक्तत्व तथा उसकी टीस उसके इस कथन से स्पष्ट होती है - "पर आप मेरी आत्मा के मालिक नही है" । [१०]

खंडीत व्यक्तीत्व **(Split personality)** :- कुंतल जैसे सुशिक्षित नारी की यह विवशता है की, वह अपने पति जयदेव के बारे में सबकुछ जानकर भी भारतीय नारी की तरह सब सह लेती है। आज की पुँजीवादी अर्थव्यवस्थाने उसे सब सहने के लिए विवश किया है। साथ ही आधुनिकता का मुखौटा लगाकर जीवन जीने के लिए जयदेव जैसे दोहरे व्यक्तीत्व ने उसे बाध्य किया है।

मानवीय संबंधो में निर्माण खोखलापनः- आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था में मानवीय संबंधो का खोखलापन, औपचारीकता,

मानवीय प्रेम की, उष्मा का अभाव, महानगरीय जीवन में स्वार्थ और दिखावटी जींदगी के बीच जीस अकेलेपन को व्यक्ती को झेलना पड रहा है, उसकी पीडा असहनीय है । डॉ. लाल ने अपने नाटकों के माध्यम से बदलते मानव संबंधो का यथार्थ चित्रण किया है। आज के भारतीय समाज मे मानव संबंध संकट में है । आधुनिक जीवन की सबसे बडी विडंबना यह है की, आज दाम्पत्य जीवन पुराने मुल्यो का विघटन हो रहा है। अस्मिता और अहंभाव की प्रवृत्ती उभर रही है।

पति- पत्नी संबंधों में दरार एवंम अकेलापन :- पती पत्नी के संबंध मे एक दरार टूटन और अकेलापन है । आज के नये संदर्भ मे रिश्ते का अर्थ सिर्फ एक छत के निचे रहने से अधिक कुछ नही है । रहते हुए भी न रहने का बोध जीवन मे अनपेक्षित ठहराव निर्माण कर देते है। परिचित होते हुए भी अपरिचित की गंध जीवन को अधिक यातना दायक बना देती है। अपनो के बीच बेगाना होने की आधुनिक यंत्रणा और अकेलेपन की यातना ने आज के मनुष्य को तोड डाला है। । दाम्पत्यगत दुरियॉ अपूर्णता, रिक्तता बोध और अकेलेपन के इस स्थिति ने अनेक वैवाहिक जीवन संबंधो को खोखला और मात्र जीवन जीने को विवशता का रुप दिया है । इसी विवशता को जयदेव और कुंतल भोग रही है । दोनों के जीवन में अकेलापन और खालीपन आ चुका है। जयदेव अपने अकेलेपन को दुर करने के लिए ताश खेलता है । अपनी आतंरीक कमजोरी को जयदेव शक्ती, कभी अधिकार और कभी कई कई भुखैटे लगाकर आधुनिकता का ढोंग करके ढँकना चाहता है । लेकिन अंत मे वह स्वयः इस अकेलेपन और असहायता को स्वीकार करते हुए कहता है - "कुंतल! मैने तुमसे कहॉ था ना, मेरे पास दो व्यक्तित्व है पर आज मै कहंता हूँ कि, ये दोनो झुठे है । तुम नही जानती मै तुमसे कहाँथाना , मेरे पास दो व्यक्तीत्व है पर आज मै कहंता हूँ कि, ये दोनो झुठे है । तुम नही जानती मै अकेले कितना निर्बल हूँ।" [११] इस प्रकार नाटककार जयदेव द्वारा धन और अधिकार से लिप्त व्यक्ति की कह्णास्थिती को अंकित किया है ।

भारतीय स्त्री की विवशता : - वही दुसरी ओर आदर्श भारतीय नारी का प्रतिक कुंतल अपने आदर्शोसे घर और फुलवारी, पती जयदेव को संभालती है । वही अपनी उदारता से, वीरता से प्रेस कर्मचारीयोंका सामना भी करती है । प्रेस कर्मचारीयोंकी हडताल में जब लाठी मार होता है । तब जयदेव को बचाकर मार अपने सिरपर लेते हुए कहती है- "चोट सिर्फ मेरे माथेपर लेते हुए कहती है, केसर का फुल मेरे आँचल मे बंधा है।" [१२]

निष्कर्ष :- साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध है । साहित्य में मानवीय जीवन एवं समाज का ही प्रतिबींब अधिक होता है। आधुनिक साहित्य मे नाटक महत्वपूर्ण विधा है । जिसमे आधुनिक नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल विख्यात और प्रसिध्द नाटककार है । उनके नाटकों में जीवन के प्रत्येक समस्योकों उभारने का सफल प्रयास हुआ है । प्रस्तुत 'रातरानी' में जयदेव कुंतल के संबंध ड्डीक इसी को दर्शाते है ।

पूँजी एवंम आधुनिकता के आकर्षन ने मनुष्य को सुखोपभोग की तरफ प्रेरित किया है।जिसमे मानवीय रिश्ते ताक पर रखे गये है। परिणाम स्वरप झूठे, अहंकारमय व्यक्तित्व को लेकर दोहरी मार बर्दाश्त करता परिवार (पती-पत्नी) भीतर ही भीतर टुटन, घुटन संत्रास, पीडा, भिड मे होकर भी अकेलापन, कुंठा भोगने के लिए मजबुर है । परंतू भारतीय संस्कृति से प्रभावित कुंतल ऐसी स्थिति में भी सही रास्ता खोज लेती है। और संबंधो के खोखलेपन को दुर कर पूर्ण समर्पणद्वारा अपने रिश्ते कों सींचती है। परिणाम स्वरुप टूटते परिवार को अपने स्तर बचाने का वह एक सफल प्रयास करती है। संबंधो की बुनियादी जरुरत प्रेम, समर्पण, त्याग विश्वास, इन मानवीय मुल्योंकि आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य मे भी प्रतिष्ठा स्थापित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. प्रो. उदय भानू सिंग (सं) : साहित्य अध्यन की दृष्टीयाँ : पृ.१८ २. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल : राम की लडाई (भूमिका) : पृ. २,३ ३. डॉ. दशरथ ओझा : आज का हिंदी नाटक : प्रगती और प्रभाव : पृ.७६ ४. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल : रातरानी : पृ.१०८ ५ वही : पृ.११९ ६. वही : पृ.११९ ७. डॉ.रमेश गौतम : हिंदी के प्रतिक नायक : पृ.२७८ ८. डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल : रातरानी : पृ.१०५ ९. वही : पृ.१११ १०. वही: पृ.१०२ ११. वही : पृ.१२९१२. वही : पृ.१२०